4
देव

(जन्म : संवत् 1730 वि. – निधन : 1824 वि.)

जीवन परिचय –

रीतिकालीन काव्य परम्परा में विशिष्ट स्थान रखने वाले कवि देव का जन्म विक्रम संवत् 1730 वि. में हुआ। इनके ग्रन्थों से ज्ञात होता है कि ये इटावा के रहने वाले थे। इस संबंध में एक उक्ति प्रचलित है –

''द्यौस–रिया कवि देव को नगर इटावो वास''

इनके पिता का नाम कुछ विद्वान बिहारीलाल दुबे मानते हैं। इनके वंशज वर्तमान में इटावा और कुसमरा में रहते हैं।

देव की रचनाओं की संख्या 52 कही जाती है किन्तु इनकी प्रमुख और प्राप्त रचनाओं में भावविलास, भवानीविलास, कुशलविलास, रसविलास, काव्य रसायन, देवचरित्र, अष्टयाम, सुजानविनोद, प्रेमतरंग आदि हैं।

देव ने भी केशव की भाँति कवि और आचार्य कर्म का निर्वाह किया था। स्वभाव से रसिक होने के कारण उनके काव्य में श्रृंगार रस का उच्छल प्रवाह बहता है। यह श्रृंगारिकता छिछली नहीं अपितु उसमें विशेष गंभीरता विद्यमान है। वे वैसे तो रसवादी आचार्य थे परन्तु अलंकारों के स्वाभाविक प्रयोग के प्रति उनका आग्रह था। देव ने साहित्यिक ब्रजभाषा को अपनाया था परन्तु उसमें संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, फारसी तथा उत्तर भारत की अन्य बोलियों के शब्दों का स्वतंत्रता से प्रयोग मिलता है।

इस प्रकार कवि देव काव्य सृष्टि और आचार्य दृष्टि के कारण ऐसे महाकवि हैं, जिन्होंने तत्कालीन सामाजिक एवं साहित्यिक परिस्थितियों में हिन्दी साहित्य को अमूल्य ग्रन्थ रत्न प्रदान किए।

पाठ परिचय –

यहाँ निर्धारित कविता में देव ने अपने आराध्य श्रीकृष्ण का गुणकथन किया है। साँवरिया श्रीकृष्ण के पाँवों से घुँघरू के मधुर स्वर झंकृत हो रहे हैं। वे पीत वसन में सुहावने लग रहे हैं। माथे पर मोर मुकुट है। नयन चंचल हैं। मंद हँसी चेहरे पर शोभायमान है। कृष्ण के लोक प्रचलित स्वरूप को कवि ने अभिधा में समग्रता से उपस्थित कर दिया है। देव को पेचीले मजमून की बुनावट में निपुणता हासिल थी। दूसरे पद्य में उन्होंने मौलिकतापूर्वक कृष्ण के जादुई सूरत में गोपिकाओं के विवश समर्पण का वर्णन किया है। तीसरा पद्य स्मृति एवं स्वप्न कविता का संगम है। नायिका का स्वप्निल संसार उसके जागते ही खो जाता है। स्वप्न में सुखद मिलन है और जागरण में जुदाई। यह विडम्बना ही कविता की मौलिकता एवं खूबसूरती है।

देव

पाँयनि नूपुर मंजु बजैं, कटि–किंकिनि में धुनि की मधुराई
साँवरे अंग लसै पट पीत, हिये हुलसै बन–माल सुहाई।।
माथे किरीट, बड़े दृग चंचल, मंद हँसी मुख चंद जुन्हाई।
जै जग–मंदिर–दीपक सुंदर, श्री ब्रज–दूलह देव–सहाई।।

धार में धाय धँसी निरधार ह्वै, जाय फँसी, उकसीं न अबेरी।
    री अंगराय गिरीं गहरी, गहि, फेरे फिरीं औ घिरी नहीं घेरी।।
देव कछू अपनो बस ना, रस–लालच लाल चितै भयीं चेरी।
    बेगि ही बूड़ि गयी पखियाँ, अखियाँ मधु की मखियाँ भयीं मेरी।।

झहरि झहरि झीनी बूँद हैं परति मानो,
    घहरि घहरि घटा घेरी है गगन में।
आनि कह्यो स्याम मो सों, चलौ झूलिबे को आजु
    फूली ना समानी, भई ऐसी हौं मगन मैं।।
चाहति उठयोई, उड़ि गई सो निगोड़ी नींद,
    सोय गए भाग मेरे जागि वा जगन में।
आँखि खोलि देखौं तो, घन हैं ना घनस्याम
    वेई छायी बूँदें मेरे, आँसु ह्वै दृगन में।।

कठिन शब्दार्थ

नूपुर	–	घुँघरू,
कटि	–	कमर,
लसै	–	सुशोभित
किरीट	–	मुकुट
दृग	–	नेत्र
जुन्हाई	–	चाँदनी

चेरी	–	दासी
बेगि	–	तेजी से
पखियाँ	–	पंख

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. कवि देव का जन्म स्थान है –

   (क) इटावा (ख) सौरों (ग) रूनुकता (घ) अज्ञात

2. 'घहरी–घहरी घटा' में कौन–सा शब्दालंकार है?

   (क) रूपक (ख) उपमा (ग) अनुप्रास (घ) यमक

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

3. 'श्री ब्रजदूलह' की संज्ञा किसे प्रदान की गई है?
4. रस की लालची और दासी कौन हो गई है ?
5. श्याम ने किसे झूला झूलने के लिए आमंत्रित किया?

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

6. नेत्रों को मधुमक्खी के समान क्यों बताया गया है?
7. नायिका के भाग क्यों सो गये?
8. 'जै जग मंदिर दीपक सुंदर' से कवि का क्या तात्पर्य है?

निबंधात्मक प्रश्न –

9. काव्यांश के आधार पर कृष्ण के सौन्दर्य का वर्णन कीजिए।
10. पठितांश के आधार पर देव की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
11. निम्नलिखित पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

    (क) पाँयनि नूपुर मंजु बजैं, कटि–किंकिनि में धुनि की मधुराई .... जै जग–मंदिर–दीपक सुंदर, श्री ब्रज–दूलह देव–सहाई।।

    (ख) चाहति उठयोई, उड़ि गई सो निगोड़ी नींद .... वेई छायी बूँदैं मेरे, आँसु ह्वै दृगन में।।